रविवार 30 मई, 2021

विषय — प्राचीन और आधुनिक काला जादू,उपनाम कृत्रिम निद्रावस्था और हाइपोहान

स्वर्ण पाठः 1 यूहन्ना 3 : 7

"हे बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाईं धर्मी है।"

उत्तरदायी अध्ययन: 1 पतरस 5 : 6-11

6 इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।
7 और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है।
8 सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।
9 विश्वास में दृढ़ हो कर।
10 अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा।
11 उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 2 थिस्सलुनीकियों 2 : 3, 4 (*से 1st* ,)

3 किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरूष अर्थात विनाश का पुत्र प्रगट न हो।
4 जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा।

2. 2 तीमुथियुस 3 : 1-5, 14-17

1 पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे।
2 क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालने वाले, कृतघ्न, अपवित्र।

3 दयारिहत, क्षमारिहत, दोष लगाने वाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी।
4 विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे।
5 वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना।
14 पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था
15 और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।
16 हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।
17 ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए॥

3. 1 राजा 13: 11-21 (*से 4th,*), 22, 24 (*से*:)

11 बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था, और उसके एक बेटे ने आकर उस से उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे; और जो बातें उसने राजा से कही थीं, उन को भी उसने अपने पिता से कह सुनाया।
12 उसके बेटों ने तो यह देखा था, कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया था, किस मार्ग से चला गया, सो उनके पिता ने उन से पूछा, वह किस मार्ग से चला गया?
13 और उसने अपने बेटों से कहा, मेरे लिये गदहे पर काठी बान्धो; तब उन्होंने गदहे पर काठी बान्धी, और वह उस पर चढ़ा,
14 और परमेश्वर के जन के पीछे जा कर उसे एक बांजवृझ के तले बैठा हुआ पाया; और उस से मूछा, परमेश्वर का जो जन यहूदा से आया था, क्या तू वही है?
15 उसने कहा हां, वही हूँ। उसने उस से कहा, मेरे संग घर चलकर भोजन कर।
16 उसने उस से कहा, मैं न तो तेरे संग लौट सकता, और न तेरे संग घर में जा सकता हूँ और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊंगा, वा पानी पीऊंगा।
17 क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहां न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना।
18 उसने कहा, जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूँ; और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए। यह उसने उस से झूठ कहा।
19 अतएव वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पीया।
20 और जब वे मेज पर बैठे ही थे, कि यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुंचा, जो दूसरे को लौटा ले आया था।

21 और उसने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा से आया था, पुकार के कहा, यहोवा यों कहता है इसलिये कि तू ने यहोवा का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी उसे भी नहीं माना;
22 परन्तु जिस स्थान के विषय उसने तुझ से कहा था, कि उस में न तो रोटी खाना और न पानी पीना, उसी में तू ने लौट कर रोटी खाई, और पानी भी पिया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी।
24 जब वह मार्ग में चल रहा था, तो एक सिंह उसे मिला, और उसको मार डाला, और उसकी लोथ मार्ग पर पड़ी रही, और गदहा उसके पास खड़ा रहा और सिंह भी लोथ के पास खड़ा रहा।

4. भजन संहिता 43 : 1, 2 (*से*:), 3-5

1 हेपरमेश्वर, मेरा न्याय चुका और विधर्मी जाति से मेरा मुकद्दमा लड़; मुझ को छली और कुटिल पुरूष से बचा।
2 क्योंकि हे परमेश्वर, तू ही मेरी शरण है।
3 अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुवाई करें, वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान में पहुंचाएँ!
4 तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा, उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का कुण्ड है; और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर मैं वीणा बजा बजाकर तेरा धन्यवाद करूंगा॥
5 हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है; मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा॥

5. इफिसियों 4 : 1-3, 13-15

1 सोमैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।
2 अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।
3 और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।
13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।
14 ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों।
15 वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं।

6. इफिसियों 6 : 10-18 (*से*,), 23, 24

10 निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।
11 परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको।
12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।
13 इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।
14 सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मीकता की झिलम पहिन कर।
15 और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर।
16 और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।
17 और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।
18 और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो।
23 परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले।
24 जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह होता रहे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 100 : 1-11

कृत्रिम निद्रावस्था या पशु चुंबकत्व को पहली बार जर्मनी में मेस्मर द्वारा 1775 में लाया गया था। अमेरिकी साइक्लोपीडिया के अनुसार, उन्होंने इस तथाकथित बल पर विचार किया, जो उन्होंने कहा कि बीमारी को कम करने के साधन के रूप में एक से अधिक जीवित जीवों द्वारा किया जा सकता है। उनके प्रस्ताव इस प्रकार थे:

"आकाशीय पिंडों, पृथ्वी और एनिमेटेड चीजों के बीच एक पारस्परिक प्रभाव मौजूद है। जानवरों के शरीर इस एजेंट के प्रभाव के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं, जो नसों के पदार्थ के माध्यम से फैलते हैं।"

2. 101 : 21-11

पशु चुंबकत्व के कामकाज के लेखक की अपनी टिप्पणियों ने उसे समझा दिया कि यह एक उपचारात्मक एजेंट नहीं है, और इसका प्रभाव उन पर है जो इसका अभ्यास करते हैं, और उनके विषयों पर जो इसका विरोध नहीं करते हैं, नैतिक और शारीरिक मृत्यु का कारण बनते हैं।

यदि पशु चुंबकत्व रोग को कम करने या ठीक करने के लिए लगता है, तो यह उपस्थिति भ्रामक है, क्योंकि त्रुटि त्रुटि के प्रभाव को दूर नहीं कर सकती है। त्रुटि के तहत बेचैनी आराम के लिए बेहतर है। किसी भी उदाहरण में पशु चुंबकत्व का प्रभाव नहीं है, जिसे भ्रम के प्रभाव के अलावा हाल ही में हिप्नोटिज्म कहा जाता है। इससे प्राप्त होने वाला कोई भी लाभ गूढ़ जादू में किसी के विश्वास के समानुपाती होता है।

पशु चुंबकत्व के पास कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, क्योंकि भगवान सभी को नियंत्रित करता है जो वास्तविक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है, और उनकी शक्ति न तो पशु है और न ही मानव। विज्ञान पशु चुंबकत्व, मेस्मेरिज्म, या हिप्नोटिज्म में एक विश्वास और इस विश्वास जानवर होने का आधार एक नकारात्मकता है, जिसमें न तो बुद्धि, शक्ति, न ही वास्तविकता है, और इस अर्थ में यह तथाकथित नश्वर मन की एक अवास्तविक अवधारणा है।

लेकिन आत्मा का एक वास्तविक आकर्षण है। ध्रुव को सुई की ओर इशारा करना इस सर्व-शक्तिमान या ईश्वर, दिव्य मन के आकर्षण का प्रतीक है।

3. 102 : 16-23

पशु चुंबकत्व के हल्के रूप गायब हो रहे हैं, और इसकी आक्रामक विशेषताएं सामने आ रही हैं। अपराध के करघे, नश्वर विचार के अंधेरे अवकाश में छिपे हुए हैं, हर घंटे बुनाई जाले अधिक जटिल और सूक्ष्म हैं। इसलिए रहस्य पशु चुंबकत्व की वर्तमान विधियां हैं कि वे उम्र को अकर्मण्यता में बदल देते हैं, और उस विषय पर बहुत उदासीनता उत्पन्न करते हैं जो आपराधिक इच्छा करता है।

4. 95 : 28-3

मूढ़तापूर्ण भ्रमों से त्रस्त, संसार शैशवावस्था के पालने में सो रहा है, घंटों स्वप्न देख रहा है। भौतिक भावना अस्तित्व के तथ्यों को प्रकट नहीं करती है; लेकिन आध्यात्मिक भावना मानव चेतना को शाश्वत सत्य में ले जाती है। मानवता धीरे-धीरे पाप की भावना से आध्यात्मिक समझ में आगे बढ़ती है; सब कुछ ठीक से सीखने की अनिच्छा, ईसाईजगत को जंजीरों से बांधती है।

5. 102: 30-5 (*से 1st.*)

मानव जाति को सीखना चाहिए कि बुराई शक्ति नहीं है। इसकी तथाकथित निरंकुशता है, लेकिन कुछ भी नहीं है। क्रिश्चियन साइंस बुराई के साम्राज्य को दूर करता है, और पूर्व में परिवारों में और इसलिए समुदाय में स्नेह और सदाचार को बढ़ावा देता है। प्रेरित पौलुस बुराई के अवतार को "इस दुनिया के देवता" के रूप में संदर्भित करता है, और आगे इसे बेईमानी और चालाकी के रूप में परिभाषित करता है।

6. 103 : 15-17, 29-7

अधिकतम अच्छाई अनंत भगवान और उनके विचार, सभी में है। बुराई एक झूठ है।

वास्तव में कोई नश्वर मन नहीं है, और परिणामस्वरूप नश्वर विचार और इच्छा-शक्ति का कोई संक्रमण नहीं है। जीवन और अस्तित्व ईश्वर के हैं। क्राइस्टियन साइंस में, मनुष्य कोई नुकसान नहीं कर सकता, क्योंकि वैज्ञानिक विचार सच्चे विचार हैं, भगवान से मनुष्य के लिए गुजर रहे हैं।

जब ईसाई विज्ञान और पशु चुंबकत्व दोनों को समझ लिया जाता है, क्योंकि वे दूर की तारीख में नहीं होंगे, तो यह देखा जाएगा कि इस पुस्तक के लेखक को भेड़ के कपड़ों में भेड़ियों द्वारा इतना अन्यायपूर्ण रूप से क्यों सताया और विश्वास किया गया है।

7. 105 : 22-29

जो कोई भी अपनी विकसित मानसिक शक्तियों का उपयोग भागे हुए अपराधी की तरह ताजा अत्याचार करने के लिए करता है जैसे अवसर मिलता है वह कभी भी सुरक्षित नहीं होता है। भगवान उसे गिरफ्तार कर लेंगे। ईश्वरीय न्याय उसे संभाल लेगा। उसके पाप उसकी गर्दन के चारों ओर चक्की के पाट होंगे, जो उसे अपमान और मृत्यु की गहराई तक तौलेंगे। त्रुटि का बढ़ना उसके विनाश की भविष्यवाणी करता है, और प्राचीन स्वयंसिद्ध की पुष्टि करता है: "जिसे देवता नष्ट करते हैं, वे पहले पागल करते हैं।"

8. 542 : 19-26

सत्य को ईश्वर के अपने तरीके से त्रुटि को उजागर करने और नष्ट करने दें, और मानव न्याय को ईश्वरीय स्वरूप दें। पाप को उसका पूरा दंड मिलेगा, दोनों के लिए कि वह क्या है और जो वह करता है। न्याय पापी को चिन्हित करता है, और नश्वर लोगों को सिखाता है कि वे ईश्वर के मार्ग के निशान को न हटाएं। अपने ही नरक से ईर्ष्या करने के लिए, न्याय झूठ को भेजता है, जो खुद को आगे बढ़ाने के लिए, परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ता है।

9. 96 : 11-4

"सबसे गहरा समय सुबह से पहले होता है।"

यह भौतिक दुनिया अब भी परस्पर विरोधी ताकतों के लिए अखाड़ा बन रही है। एक तरफ कलह और निराशा होगी; दूसरी तरफ विज्ञान और शांति होगी। भौतिक विश्वासों का टूटना अकाल और महामारी, चाहत और शोक, पाप, बीमारी और मृत्यु के रूप में प्रतीत हो सकता है, जो तब तक नए चरणों को मानते हैं जब तक कि

उनका कुछ भी दिखाई नहीं देता। ये गड़बड़ी त्रुटि के अंत तक जारी रहेगी, जब सभी कलह को आध्यात्मिक सत्य में निगल लिया जाएगा।

नश्वर त्रुटि एक नैतिक रासायनिककरण में गायब हो जाएगी। यह मानसिक किण्वन शुरू हो गया है, और जब तक विश्वास उपज की सभी त्रुटियों को समझने तक जारी रहेगा। विश्वास परिवर्तनशील है, लेकिन आध्यात्मिक समझ अपरिवर्तनीय है।

जैसे-जैसे यह अंतर्ग्रहण समीप आता जाता है, वह दिव्य विज्ञान के अनुसार अपने पाठ्यक्रम को आकार देता गया है। जैसे-जैसे भौतिक ज्ञान कम होता जाता है और आध्यात्मिक समझ बढ़ती है, वास्तविक वस्तुओं को भौतिक के बजाय मानसिक रूप से पकड़ा जाएगा।

इस अंतिम संघर्ष के दौरान, दुष्ट दिमाग ऐसे साधनों को खोजने का प्रयास करेगा जिनके द्वारा अधिक बुराई को पूरा किया जा सके; लेकिन जो लोग क्रिश्चियन साइंस को समझते हैं, वे अपराध को रोकेंगे। वे त्रुटि की अस्वीकृति में सहायता करेंगे। वे कानून और व्यवस्था बनाए रखेंगे और आनंदपूर्वक परम पूर्णता की निश्चितता का इंतजार करेंगे।

10. 97 : 21-25

व्यापक तथ्यों में खुद के खिलाफ सबसे अधिक गलतियाँ हैं, क्योंकि वे कवर के तहत त्रुटि लाते हैं। सत्य बोलने के लिए साहस चाहिए; क्योंकि जितनी अधिक शनि अपनी आवाज उठाएगा, संभावना उतनी ही जोर से चिल्लाएगी, जब तक कि इसकी पूर्व ध्वनि हमेशा के लिए तिरनामी में चुप नहीं जाए।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन

सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6